

कुबेर जी की आरती: ॐ जय यक्ष कुबेर हरे

पद 1

ॐ जै यक्ष कुबेर हरे, स्वामी जै यक्ष जै यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों के, भण्डार कुबेर भरे॥

पद 2

शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े, स्वामी भक्त कुबेर
बड़े।
दैत्य दानव मानव से, कई-कई युद्ध लड़े॥

पद 3

स्वर्ण सिंहासन बैठे, सिर पर छत्र फिरे, स्वामी सिर पर
छत्र फिरे।
योगिनी मंगल गावें, सब जय जय कार करें॥

पद 4

गदा त्रिशूल हाथ में, शस्त्र बहुत धरे, स्वामी शस्त्र
बहुत धरे।
दुख भय संकट मोचन, धनुष टंकार करें॥

पद 5

भाँति भाँति के व्यंजन बहुत बने, स्वामी व्यंजन बहुत
बने।
मोहन भोग लगावें, साथ में उड़द चने॥

पद 6

बल बुद्धि विद्या दाता, हम तेरी शरण पड़े, स्वामी हम
तेरी शरण पड़े।
अपने भक्त जनों के, सारे काम संवारे॥

पद 7

मुकुट मणी की शोभा, मोतियन हार गले, स्वामी
मोतियन हार गले।
अगर कपूर की बाती, घी की जोत जले॥

पद 8

यक्ष कुबेर जी की आरती, जो कोई नर गावे, स्वामी जो
कोई नर गावे।
कहत प्रेमपाल स्वामी, मनवांछित फल पावे॥